नईदुनिया

नाइजर में एयरपोर्ट पर आतंकी हमला, 11 सनिकों की मौत, 22 दहशतगर्द ढेर

नियामी (नाइजर)

नाइजर की राजधानी नियामी में डियोरी हमानी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर गुरुवार तड़के आतंकवादी हमला हुआ हैं। एयरपोर्ट पर एक घंटे से ज्यादा समय तक धमाके और गोलीबारी होती रही। नाइजर गणराज्य की सन्य सरकार की शुरुआती रिपोर्ट में बताया गया कि हमले में 11 सनिक और 22 आतंकवादी मारे गए।

अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्र प्रीमियर टाइम्स नाइजीरिया की रिपोर्ट के अनुसार, इस हमले में दो आम नागरिकों की भी मौत हो गई। बताया जा रहा ह कि यह गोलीबारी एयरपोर्ट के मुख्य प्रवेश द्वार के पास शुरू हुई। इसके बाद सुरक्षा बलों को सारे परिसर को घेर लिया।

स्थानीय लोगों ने बताया कि सेना की घेराबंदी के बाद आतंकवादी इधर-उधर भागने लगे। नाइजर की सेना ने दहशतगर्दों का पीछा किया। भागते समय आतंकवादी हथियारों का जखीरा वहीं छोड़ गए थे। अभी तक किसी भी समूह ने एयरपोर्ट पर हुए इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली ह, लेकिन इसी साल जनवरी में इसी एयरपोर्ट पर ऐसी ही एक घटना हो चुकी हैं।

इस्लामिक स्टेट इन द साहैं। जुड़े हथियारबंद आतंकवादियों ने मोर्टार और ड्रोन का इस्तेमाल करते हुए कई तरफ से हमला किया था। उन्होंने नागरिक टर्मिनल और उससे सटे एयर बेस 101, दोनों को निशाना बनाया था। यह एयर बेस देश के सन्य अभियानों के लिए एक अहम रणनीतिक केंद्र हैं। जनवरी के हमले में नाइजर की सेना के साथ रूसी अफ्रीका कार्प्स के लड़ाके भी थे। इन्होंने कई आतंकवादियों को मार गिराते हुए कुछ जीवित पकड़ लिया था। इस हमले में रनवे, सन्य वाहनों और कमर्शियल विमानों को भी भारी नुकसान पहुँचाया।

नाइजर एक दशक से ज्यादा समय से संगठित इस्लामी उग्रवादी विद्रोह का सामना कर रहा हैं। अपने पड़ोसी देशों माली और बुर्किना फासो की तरह नाइजर में भी सन्य शासन हैं। इस सन्य सरकार ने व्यापक क्षेत्रीय हिंसा को निर्णायक रूप से खत्म करने का वादा करते हुए सत्ता पर कब्जा किया था। नाइजर हिंसक चरमपंथ के ख़िलाफ एक जटिल और कई मोर्चों पर लड़ी जा रही लड़ाई के केंद्र में हैं। चरमपंथ ने 2010 के दशक के मध्य से ही पूरे साहैं। क्षेत्र को अस्थिर कर दिया हैं। इस समय नाइजर को अलग-अलग तरह के विद्रोही समूहों का सामना करना पड़ रहा हैं। पश्चिम में (माली और बुर्किना फासो की सीमाओं के पास), यह आईएस-साह। और अल-कायदा से जुड़े जेएनआईएम से लड़ रहा हैं। दक्षिण-पूर्व में (लेक चाड के पास), यह बोको हराम और इस्लामिक स्टेट वेस्ट अफ्रीका प्रोविंस से मुकाबला कर रहा हैं।

न्यूज ब्रीफ

आपरेशन सिंदूर और ईरान युद्ध ने पाकिस्तानी सरकार को जीवनदान दे दिया

वाशिंगटन। पाकिस्तान की पालिटिकल एक्सपर्ट डा. आयशा सिद्दीका ने कहा है। कि आपरेशन सिंदूर की

वजह से पाकिस्तान का शासन ढहने से बच गया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की सेना नरेटिव बनाने में कामयाब रही और डोनाल्ड ट्रंप ने उस नरेटिव को काफी बढ़ाया जिससे पाकिस्तान के शासन को जीवनदान मिल गया। उन्होंने एक पत्रकार से बात करते हुए बताया कि कसे हाल के क्षेत्रीय संकटों से पाकिस्तान की सेना को नई ताकत मिली ह। डा. आयशा सिद्दीका किंग्स कालेज लंदन में वार स्टडीज की सीनियर फेलो हं और पाकिस्तान की सेना और सरकार के बीच की डार्क स्टोरी पर कई किताब लिख चुकी हं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ब्राडकास्टर से बातचीत में डा. सिद्दीका ने कहा कि भारत के आपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तानी सेना ने कहीं ना कहीं अपनी जनता को बिना सबूत दिए इस बात का विश्वास दिला कि हमने 3-4 राफेल गिरा दिए हं, जबकि पाकिस्तान की सेना की तरफ से एक भी सबूत नहीं दिए गए और भारत ने कई सारे सबूत दुनिया के सामने रख दिए थे। पाकिस्तानी सेना के इस दावे को ट्रंप ने अपने बयान से बढ़ाया। उन्होंने कभी कहा कि 7 विमान गिरे, कभी 8 विमान गिरे तो कभी 10 विमान गिरे और इससे पाकिस्तानी सेना के नरेटिव को बल मिला। उन्होंने कहा कि भारत के आपरेशन सिंदूर से पहले पाकिस्तान की शहबाज शरीफ की सरकार और सेना के खिलाफ देश में जबरदस्त गुस्सा था। इमरान खान के समर्थकों ने सेना और सरकार का जीना मुहाल कर रखा था लेकिन पाक सेना प्रमुख असीम मुनीर ने आपरेशन सिंदूर को अपने फायदे के लिए भुनाया। डा. आयशा ने इस्लामाबाद मेमोरंडम आफ अंडरस्टंडिंग पर बातचीत में पाकिस्तान की अहम भूमिका का जिक्र किया और कहा कि इससे अमेरिका और ईरान के बीच तनाव कम करने में मदद मिली।

बांग्लादेश का आश्वासन तारिक रहमान के चीन दौरे से भारत से संबंध अप्रभावित

ढाका। बांग्लादेश ने साफ किया है। कि प्रधानमंत्री तारिक रहमान की आगामी विदेश यात्रा, जिसमें

मलेशिया और चीन का दौरा शामिल ह, का भारत के साथ उसके संबंधों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होगा। ढाका के सरकारी सूत्रों ने जोर दिया कि भारत और बांग्लादेश के द्विपक्षीय संबंधों की अपनी विशिष्ट गतिशीलता और जरूरतें हं, जो किसी भी तीसरे देश के साथ संबंधों से अलग और महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री रहमान 17 फरवरी को सत्ता में आने के बाद अगले सप्ताह अपनी पहली विदेश यात्रा पर जा रहे हं।बांग्लादेशी अधिकारियों ने बताया कि भारत के साथ बांग्लादेश के रिश्तों की जगह कोई दूसरा देश नहीं ले सकता, खासकर करीब 4,000 किलोमीटर लंबी साझा सीमा के कारण। प्रधानमंत्री रहमान के आगामी जुलाई में नई दिल्ली दौरे पर आने की उम्मीद ह, यह उनकी मलेशिया और चीन यात्रा के बाद होगा। बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) के सूत्रों ने भी इसकी पुष्टि की है। कि भारत का दौरा निश्चित रूप से होगा। ढाका और दिल्ली के संबंधों को बांग्लादेशी नेताओं की विदेश यात्राओं से स्वतंत्र बताकर एक अधिकारी ने रिश्तों में सकारात्मक गति बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि पिछले राजनीतिक बदलावों के बाद से द्विपक्षीय संबंध कुछ उतार-चढ़ाव भरे दौर से गुजर रहे हं। हाल ही में, भारत के मनोनीत उच्चायुक्त दिनेश त्रिवेदी बांग्लादेश पहुंचे और उन्होंने बातचीत के माध्यम से मतभेदों को सुलझाने का आह्वान किया। हालांकि, उनके बयानों को लेकर मुख्य विपक्षी दल जमात-ए-इस्लामी ने विरोध प्रदर्शन किया, जिसमें राजदूत पर बांग्लादेश को भारत के साथ मिलाने की बात कहने का आरोप लगाया गया।

रूस पर यूक्रेन का सबसे बड़ा ड्रोन हमला, तेल डिपो तबाह,1,000 से ज्यादा ड्रोन और क्रूज मिसाइलों से निशाना, एक की मौत

मास्को/कीव। यूक्रेन ने गुरुवार को रूस पर अब तक का सबसे बड़ा ड्रोन हमला किया। रूस के रक्षा मंत्रालय के मुताबिक, रातभर में करीब 1,000 ड्रोन और चार क्रूज मिसाइलों को मार गिराया गया। इनमें करीब 200 ड्रोन राजधानी मास्को की तरफ बढ़ रहे थे। हमले में दक्षिणी रोस्तोव क्षेत्र के एक आयल डिपो धमाके से तबाह हो गया, यहां मौजूद एक व्यक्ति की मौत हो गई। वहीं मास्को की कपोतन्या आयल रिफाइनरी पर भी हमला हुआ। विस्फोट के बाद आयल डिपो टंक का ढक्कन कई मीटर ऊपर उछल गया और आसमान में काले धुएं के गुबार छा गए। यूक्रेन के हमले के सामने रूस का एयर डिफेंस सिस्टम फेल नजर आ रहा है। मास्को की तेल रिफाइनरी दहक रही है। और 4 एयरपोर्ट बंद हो चुके हं। रूसी अधिकारियों ने गुरुवार को बताया कि यूक्रेन ने एक हफ्ते में दूसरी बार मास्को की एक आयल रिफाइनरी पर हमला किया और मास्को के एयरपोर्ट्स पर कमर्शियल फ्लाइट्स को रोक दिया। यह हमला चार साल से ज्यादा समय पहले रूस के हमले के बाद से यूक्रेन के सबसे बड़े ड्रोन हमलों में से एक था। रूस के रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसकी एयर डिफ़ेंस सिस्टम ने रात भर में कई इलाकों में 555 यूक्रेनी ड्रोन्स को मार गिराया, जिनमें से लगभग 200 को रूसी राजधानी के पास पहुंचने पर रोका गया। लेकिन कई ड्रोन शहर को निशाना बनाने में कामयाब रहे। मास्को में लगा रूस का एयर डिफेंस सिस्टम सभी ड्रोन्स को फेल नहीं कर सका।

एचएमएस हूड के डूबने की खबर ने झकझोर दिया था पूरे ब्रिटेन को

लंदन

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी का महाविशाल युद्धपोत बिस्मार्क, एक ऐसा नाम जिसने कुछ ही दिनों में पूरी दुनिया को अपनी ताकत का एहसास करा दिया था। उत्तरी अटलांटिक महासागर में 27 मई 1941 को इतिहास के एक सबसे नाटकीय अध्याय का अंत हुआ। कुछ ही दिन पहले जिस जर्मन युद्धपोत ने ब्रिटिश साम्राज्य की समुद्री ताकत को खुली चुनौती दी थी, वही अब दुश्मन जहाजों से घिरा खड़ा था। फरवरी 1939 में हम्बर्ग से लान्च किया गया 823 फुट लंबा बिस्मार्क, उस दौर के सबसे आधुनिक और शक्तिशाली युद्धपोतों में से एक था। एडोल्फ हिटलर को उम्मीद थी कि यह जहाज जर्मन नौसनिक शक्ति के पुनर्जन्म का प्रतीक बनेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, जब ब्रिटेन ने जर्मनी के समुद्री रास्तों पर कड़ी निगरानी लगा रखी थी, बिस्मार्क को अटलांटिक महासागर में मित्र देशों के व्यापारिक जहाजों और ब्रिटेन की आपूर्ति लाइनों पर हमला करने के लिए भेजा गया।

यह योजना बेहद खतरनाक थी, क्योंकि यदि बिस्मार्क खुले समुद्र में स्वतंत्र रूप से घूमने लगता, तो ब्रिटेन की समुद्री जीवनरेखा गंभीर संकट में पड़ सकती थी। फिर आया 24 मई 1941 का दिन, जब आइसलंड के पास डेनमार्क स्ट्रेट में बिस्मार्क का सामना ब्रिटिश नौसेना के गौरव एचएमएस हूड और नए युद्धपोत प्रिंस आफ वेल्स से हुआ। भीषण गोलाबारी में बिस्मार्क के एक घातक गोले ने एचएमएस हूड के गोला-बारूद भंडार को भेद दिया। क्षण भर में एक विशाल विस्फोट हुआ और ब्रिटेन का गौरव माना जाने वाला युद्धपोत दो हिस्सों में टूटकर समुद्र में समा गया। 1,418 अधिकारियों और नौसनिकों में से केवल तीन लोग जीवित बचे। यह ब्रिटिश नौसेना के इतिहास की सबसे बड़ी समुद्री त्रासदियों में से एक थी। एचएमएस हूड के डूबने की खबर ने पूरे ब्रिटेन को झकझोर दिया और तत्काल बिस्मार्क को हर हाल में खत्म करो का आदेश जारी हुआ। ब्रिटिश नौसेना ने अपने इतिहास के सबसे बड़े शिकार अभियानों में से एक शुरू किया। बिस्मार्क को खोजने के लिए लगभग 50 युद्धपोतों और सहायक जहाजों को अभियान में झोंक दिया गया। विमानवाहक पोत, क्रूजर, विध्वंसक और युद्धपोत लाखों वर्ग मील समुद्री क्षेत्र में उसकी तलाश करने लगे। करीब तीन दिनों तक अटलांटिक महासागर में पीछा चलता रहा। 24 मई 1941 की रात, विमानवाहक पोत एचएमएस विक्टोरियस से उड़ान भरने वाले स्वोर्डफिश विमानों ने पहला हमला किया, जिससे बिस्मार्क को कुछ नुकसान पहुंचा। दो दिन बाद, 26 मई को, बिस्मार्क फिर दिखाई दिया, अब वह फ्रांस के ब्रेस्ट बंदरगाह से एक दिन से भी कम दूरी पर था। यदि वह वहां पहुंच जाता, तो जर्मन हवाई सुरक्षा उसे बचा सकती थी। यहीं से इतिहास का निर्णायक मोड़ आया। विमानवाहक पोत एचएमएस आर्क रायल से 15 स्वोर्डफिश विमानों ने बिस्मार्क पर दूसरा हमला किया। भारी गोलाबारी और कठिन परिस्थितियों के बावजूद, एक टारपीडो बिस्मार्क के पिछले हिस्से में लगा और उसके रडार को जाम कर गया। अब दुनिया के सबसे चर्चित युद्धपोत की दिशा नियंत्रित करने की क्षमता लगभग समाप्त हो चुकी थी, और विशाल बिस्मार्क खुले समुद्र में असहाय फंस गया। इसके बाद ब्रिटिश बेड़े ने उसे चारों ओर से घेर लिया। 27 मई 1941 की सुबह, एचएमएस किंग जार्ज पंचम और एचएमएस राडनी समेत ब्रिटिश युद्धपोत उसके करीब पहुंचे और अंतिम हमला शुरू किया। बिस्मार्क ने अंत तक जवाबी गोलाबारी की, लेकिन अब उसके खिलाफ पूरा ब्रिटिश बेड़ा खड़ा था। करीब 90 मिनट तक चली भीषण लड़ाई में बिस्मार्क पर 700 से अधिक गोले बरसाए गए। लगातार गोलाबारी, आग, विस्फोट और टारपीडो हमलों ने जर्मनी के इस महाविशाल युद्धपोत को धीरे-धीरे एक तरते हुए मलबे में बदल दिया। आखिरकार, जब जहाज को बचाना असंभव हो गया, तो उसे स्वयं डुबाने का आदेश दिया गया, और इसी दौरान ब्रिटिश भारी क्रूजर एचएमएस डोरसेटशायर ने भी टारपीडो दागे। सुबह 10 बजकर 36 मिनट पर बिस्मार्क उत्तरी अटलांटिक की गहराइयों में समा गया। 2,221 लोगों के चालक दल में से केवल लगभग 115-116 लोग ही जीवित बच पाए। बिस्मार्क का अंत केवल एक युद्धपोत का डूबना नहीं था, बल्कि इस घटना ने साबित कर दिया कि समुद्री युद्ध का भविष्य बदल रहा है।और विमानवाहक पोतों ने दुनिया के सबसे शक्तिशाली युद्धपोत को भी अब अजेय नहीं रहने दिया।

ईरान से अगले कदमों पर वार्ता के लिए जेडी वेंस नहीं रवाना हुए स्विट्जरलंड

वाशिंगटन

फ्रांस के पेरिस में अमेरकी राष्ट्रपति और ईरानी राष्ट्रपति के शांति समझौते के 14 बिंदुओं पर हस्ताक्षर के बाद अगले कदमों पर बातचीत के लिए उपराष्ट्रपति जेडी वेंस गुरुवार रात स्विट्जरलंड के लिए रवाना नहीं हुए। इसकी पुष्टि व्हाइट हाउस ने की हैं हालांकि दोनों राष्ट्रपतियों के हस्ताक्षर के बाद मध्य पूर्व में तनाव काफी हद तक कम हुआ ह और ईरान के साथ परमाणु कार्यक्रम बातचीत का रास्ता साफ हुआ हैं

सीबीएस न्यूज और अल जजीरा की रिपोर्ट के अनुसार, वेंस के यात्रा स्थगित करने से होर्मुज जलडमरूमध्य से तेल टंकरों और जहाजों के आवागमन पर कोई फर्क नहीं पड़ा हैं दोनों राष्ट्रपतियों के हस्ताक्षर के बाद होर्मुज खुल गया हैं आवागमन में अचानक तेजी आ गई हैं व्हाइट हाउस के एक प्रवक्ता ने पत्रकारों को बताया कि उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ईरान के साथ बातचीत शुरू करने में मदद के लिए गुरुवार देररात स्विट्जरलंड के लिए रवाना नहीं हुए। प्रवक्ता ने कहा कि वेंस प्रेस कान्फ्रेंस में कह चुके हं कि तकनीकी बातचीत की योजना अभी तय नहीं हुई हैं रिपोर्ट के अनुसार, दोनों पक्ष, तकनीकी बातचीत करने की योजना बना रहैं हं। इस बीच ट्रंप प्रशासन ने कांग्रेस के नेताओं को ईरान समझौते के बारे में जानकारी दी हैं व्हाइट हाउस के एक प्रवक्ता ने कहा कि ट्रंप प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने हाउस और सीनेट के नेताओं के साथ फोन पर इस समझौते के बारे में बताया। अधिकारियों ने सीनेट की विदेश संबंध समिति और हाउस की विदेश मामलों की समिति के शीर्ष सांसद साथ ही सीनेट में बहुमत दल के नेता जान थ्यून और अल्पसंख्यक दल के नेता चक शूमर को फोन किया। वरिष्ठ अधिकारियों ने सांसदों के सवालों के जवाब भी दिए और अमेरिका और ईरान के बीच होने वाली आगामी बातचीत की रूपरेखा बताई।

इस बीच ईरान के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने ईरान के साथ हुए अमेरिकी समझौते के बावजूद दक्षिणी लेबनान में अपने सुरक्षा क्षेत्र से इजराइली सेना को हटाने का कड़ा विरोध किया हैं हिजबुल्लाह ने कहा ह कि इजराइली सेना को लेबनान की जमीन छोड़नी होगी। उधर, अमेरिकी सेंट्रल कमांड (सेंटकाम) का कहना ह कि उसने ईरानी बंदरगाहों पर लगी नाकाबंदी हटा ली है।

पहली बार मोबाइल नेटवर्क ने चांद से धरती के साथ किया कनेक्शन स्थापित

वाशिंगटन। वज्ञानिकों ने चांद पर पहली बार किसी मोबाइल नेटवर्क ने सफलतापूर्वक धरती के साथ कनेक्शन स्थापित किया। इस अभूतपूर्व प्रयास ने एक ऐसी उम्मीद को लौ दिखाई है। जिसे साकार करने में वज्ञानिक दिन-रात जुटे हैं। वज्ञानिकों के इस अभूतपूर्व प्रयास ने अंतरिक्ष अनुसंधान में एक नया अध्याय रच दिया चांद पर मोबाइल नेटवर्क का यह अनोखा प्रयास सिर्फ एक ट्रायल था, लेकिन अब इसे नासा के आर्टेमिस मिशन के साथ हकीकत में बदलने की तयारी है। नोकिया और इन्यूटिव मशीन का लंडर एथेना पिछले साल मार्च में चांद के साउथ पोल पर उतरा था। यह लंडर अपने साथ 4जी/एलटीई मोबाइल नेटवर्क सिस्टम लेकर गया था। सफलतापूर्वक लंड होने के बाद, नेटवर्क एक्टिव हुआ और धरती पर मौजूद कंट्रोल सेंटर के साथ कनेक्ट होकर डेटा भी भेजा। नोकिया का दावा है। कि इस नेटवर्क के मुख्य हिस्से, रेडियो और नेटवर्क कोर ने सही तरीके से काम किया। हालांकि, यह चांद से धरती पर काल नहीं कर पाया, क्योंकि धूप न मिलने की वजह से सौर पनल पूरी तरह चार्ज नहीं हो सके और यह नेटवर्क सिर्फ 25 मिनट ही काम कर पाया। इसके बावजूद, नोकिया बेल लब्स स्पेस कम्युनिकेशंस ने यह साबित कर दिया है कि मोबाइल नेटवर्क स्पेस में भी काम कर सकते है।

अंधेरे में चमकने लगता कसोवरी पक्षी के सिर का मुकुट शोध

न्यूयार्क

आस्ट्रेलिया और न्यू गिनी के घने वर्षा वनों में पाया जाने वाला कसोवरी पक्षी से जुड़ा एक हरान करने वाला रहस्य सामने आया हैं शोधकर्ता वज्ञानिकों के अनुसार, इसके सिर पर मौजूद मुकुट जसी संरचना अंधेरे में पराबंगनी (यूवी) प्रकाश पड़ने पर नीले और हरे रंग में चमकने लगती हैं कसोवरी को दुनिया के सबसे खतरनाक पक्षियों में गिना जाता हैं यह लगभग एक वयस्क इंसान जितना लंबा हो सकता है। और घने जंगलों में भी तेज गति से दौड़ने की क्षमता रखता है। इसके परों में खंजर जसे तीखे नाखून होते हं, जो गंभीर चोट पहुंचा सकते हं। इसके सिर पर एक विशेष संरचना होती ह, जिसे वज्ञानिक कास्क कहते है। यह हड्डी के ढांचे से बनी होती है। और ऊपर से केराटिन नामक पदार्थ से ढकी रहती हैं केराटिन वही तत्व है। जिससे मनुष्यों के बाल और नाखून बने होते हं। लंबे समय से वज्ञानिक इस कास्क के वास्तविक उपयोग को समझने की कोशिश कर रहैं थे। कुछ विशेषज्ञों का मानना था कि यह शरीर की गर्मी नियंत्रित करने, घने जंगलों में आवाज को बढ़ाने या दूसरे पक्षियों को संकेत देने का काम करता हैं हालांकि इसका फीका भूरा और काला रंग इन सिद्धांतों को पूरी तरह स्पष्ट नहीं कर पाता था।

हालिया अध्ययन में वज्ञानिकों ने पाया कि यह मुकुट सामान्य रोशनी में भले ही साधारण दिखाई

देता हो, लेकिन यूवी प्रकाश के संपर्क में आने पर चमकदार नीले और हरे रंग में बदल जाता हैं इस घटना को बायोफ्लोरेसेंस कहा जाता हैं इसमें कोई पदार्थ पराबंगनी प्रकाश को अवशोषित कर उसे दूसरे रंग की रोशनी के रूप में वापस उत्सर्जित करता हैं इस रहस्य की जांच के लिए न्यूयार्क इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी कालेज आफ ओस्टियोपथिक मेडिसिन के एनाटामिस्ट डा. टाड एल. ग्रीन और उनकी टीम ने व्यापक अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने संग्रहालयों में सुरक्षित रखे गए 95 कसोवरी सिरों और नौ जीवित पक्षियों पर परीक्षण किए। यूवी लंप की रोशनी डालने पर उनके कास्क चमकदार रंगों में प्रकाशित हो उठे। शोधकर्ताओं ने तुलना के लिए शुतुरमुर्ग और एमु जसे पक्षियों पर भी यही प्रयोग किया। इन पक्षियों में ऐसी कोई चमक नहीं मिली, जिससे स्पष्ट हुआ कि यह विशेष गुण केवल कसोवरी में पाया जाता है।

हालांकि वज्ञानिक अभी यह निश्चित नहीं कर पाए हं कि यह चमक दूसरे कसोवरी पक्षियों के लिए किसी प्रकार का दृश्य संकेत ह या फिर यह केवल जविक संरचना का उप-उत्पाद हैं इस खोज का व्यावहारिक महत्व भी हैं वज्ञानिकों का कहना है। कि मरने के वर्षों बाद भी कसोवरी के नमूनों में यह फ्लोरोसेंट पटर्न बना रहता हैं इससे पुराने जीवाश्म और नमूनों की पहचान करना आसान हो सकता हैं साथ ही, जंगलों में रहने वाले दुर्लभ कसोवरी पक्षियों की निगरानी भी अधिक सुरक्षित तरीके से की जा सकेगी। विशेषज्ञों का सुझाव है। कि यूवी फ्लश युक्त ट्रेल कमरों की मदद से इन पक्षियों की गणना और अध्ययन किया जा सकता हैं यह खोज केवल आधुनिक पक्षियों तक सीमित नहीं ह, बल्कि प्रागतिहासिक जीवों के अध्ययन में भी नई संभावनाएं खोलती हैं कई वज्ञानिक कसोवरी की तुलना मुकुटधारी डायनासोरों से करते हं। ऐसे में यह संभावना भी जताई जा रही है। कि विलुप्त हो चुके कई प्राचीन जीवों में भी ऐसे रंग और चमक मौजूद रहैं होंगे, जिनके प्रमाण जीवाश्मों में संरक्षित नहीं रह सके। बता दें कि कसोवरी पक्षी लंबे समय से अपनी आक्रामक प्रवृत्ति और खतरनाक नाखूनों के कारण वज्ञानिकों और वन्यजीव विशेषज्ञों की रुचि का केंद्र रहा है।

ईरान के हथियार को बेअसर करेगी खाड़ी देशों की 10 अरब डालर की महात्वाकांक्षी योजना

रियाद

अमेरिका और ईरान के बीच तनाव के चलते 100 दिनों से अधिक समय तक होर्मुज जलडमरूमध्य के बंद रहने से पूरी दुनिया बुरी तरह से प्रभावित हुई हं। इस वश्विक समस्या का स्थायी समाधान निकल कर खाड़ी देशों ने होर्मुज स्ट्रेट से हमेशा के लिए पीछा छुड़ाने की महत्वाकांक्षी योजना पर काम शुरू किया हैं जिसका उद्देश्य सीरिया और तुर्की को भविष्य में ऊर्जा वितरण के बड़े हब के तौर पर तयार करना ह। विश्लेषकों का मानना है। कि होर्मुज स्ट्रेट ईरान के लिए परमाणु बम से भी बड़ा रणनीतिक हथियार साबित हुआ है। और अमेरिका के साथ वर्तमान बातचीत में भी इसका अहम योगदान रहा ह। 10 अरब डालर की इस फोर सीज इनिशिएटिव योजना का मुख्य मकसद ऊर्जा निर्यात के रास्तों में विविधता लाकर यूरोप की रूसी और ईरानी तेल व गस पर निर्भरता को कम करना है। साथ ही, यह पहल खाड़ी देशों से निवेश को पश्चिमी देशों के साथ जुड़े

इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स की ओर मोड़ने का काम करेगी। इस व्यापक परियोजना में फारस की खाड़ी के साथ-साथ काला सागर, कस्पियन सागर और भूमध्य सागर को शामिल किया गया ह। इसके तहत, खाड़ी से सीरिया और तुर्की तक, इराक और जार्डन के रास्ते जमीनी निर्यात मार्गों का विस्तार किया जाएगा, जिसे कस्पियन और काला सागर बेसिन के मौजूदा निर्यात नेटवर्क से भी जोड़ा जाएगा। इस भू-राजनीतिक और बुनियादी ढांचा योजना का प्राथमिक लक्ष्य फारस की खाड़ी से निकलने वाले तेल और गस को बिना होर्मुज स्ट्रेट भेजे सीधे यूरोप और वश्विक बाजारों तक पहुंचाना है। वाशिंगटन में कार्यक्रम के दौरान नए ऊर्जा कारिडोर की विस्तृत रूपरेखा पेश की गई। योजना के पूर्ण कार्यान्वयन के बाद, इसके जरिए रोजाना 40 लाख बरल तेल और सालाना 50 अरब घन मीटर (बीसीएम) प्राकृतिक गस यूरोपीय बाजारों में भेजी जा सकेगी, जिससे वश्विक ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। न्यू लाइन्स इंस्टीट्यूट (एनएलई) के अवधारणा पत्र में बताया गया है। कि असद के बाद सीरिया में स्थिरता आने से लेवांट क्षेत्र को ऊर्जा संघर्ष के केंद्र से बदलकर महाद्वीपीय ऊर्जा कारिडोर बनाने का एक ऐतिहासिक मौका मिलेगा। एनएलई के अनुसार, फोर सीज इनिशिएटिव से चार बड़े रणनीतिक फायदे होने ह। रूस और ईरान पर निर्भरता कम करके यूरोप की ऊर्जा संप्रभुता बढ़ाना, मध्य पूर्व के महत्वपूर्ण रणनीतिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर अमेरिका का व्यापारिक दबदबा सुनिश्चित करना, ट्रांज़िट से होने वाली कमाई से सीरिया की अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण करना और पश्चिम के साथ एक स्थायी भू-राजनीतिक समझौता स्थापित करना। इस विशाल पाइपलाइन नेटवर्क को खड़ा करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय इंफ्रास्ट्रक्चर कंसोर्टियम 10 अरब डालर का निवेश जुटाएगा। हालांकि, भू-राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है। कि यह योजना सुनने में जितनी व्यवहार्य लगती है। जमीन पर उतारना उतना ही जटिल होगा। इसके लिए विभिन्न देशों के बीच मजबूत राजनीतिक सहमति, सीरिया में पूर्ण स्थिरता और कई बड़ी निर्माण कंपनियों के बीच प्रभावी तालमेल की आवश्यकता होगी। इन चुनौतियों के बावजूद, यह परियोजना खाड़ी क्षेत्र और वश्विक ऊर्जा परिदृश्य के लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हो सकती है।